# विष्णुभक्त ध्रुव

भगवान विष्णु के कई अनन्य भक्त हुए हैं, जिनमें ध्रुव का नाम सबसे पहले आता है। आसमान में उत्तर दिशा में चमकते हुए तारे को ध्रुव तारा कहते हैं। ध्रुव तारे का संबंध भगवान विष्णु के सबसे प्रिय भक्त ध्रुव से माना गया है। भगवान विष्णु और ध्रुव की कथा बहुत प्रसिद्ध है।

विष्णु पुराण के अनुसार, राजा उत्तानपाद की दो रानियाँ थीं। बड़ी रानी का नाम सुनीति और छोटी रानी का नाम सुरुचि था। सुनीति ने ध्रुव को जन्म दिया तथा सुरुचि ने उत्तम को जन्म दिया। राजा उत्तानपाद की पहली पत्नी रानी सुनीति थी, लेकिन उन्हें सुरुचि एवं उसका पुत्र उत्तम ज्यादा प्रिय थे। एक दिन ध्रुव राजा उत्तानपाद की गोद में बैठा था। उसी समय रानी सुरुचि वहाँ आई और ध्रुव को राजा की गोद में बैठा देखकर गुस्से से ध्रुव को राजा की गोद से उतार दिया और अपने पुत्र को बैठा दिया। इसके बाद वह बोली, ''जिसे मैंने जन्म दिया है, वही राजसिंहासन का उत्तराधिकारी बनेगा। यदि तुम्हें राजगद्दी चाहिए तो भगवान विष्णु की भक्ति करो और उनकी कृपा से मेरी कोख से जन्म लो, तभी तुम्हें राजसिंहासन प्राप्त होगा।''

यह सब सुनकर ध्रुव रोते हुए अपनी माँ सुनीति के पास गया और उसे सारी बात बताई। तब रानी सुनीति ने कहा कि तुम्हारे पिता को तुम्हारी सौतेली माँ और उसका पुत्र अधिक प्रिय हैं। अब हमारा सहारा केवल भगवान विष्णु ही हैं। अपनी दोनों माताओं की बात से ध्रुव का मन बहुत आहत हुआ और वे उसी समय घर छोड़कर भगवान विष्णु की तपस्या करने के लिए जंगल में चल दिए। रास्ते में उन्हें नारद मुनि मिले और उन्होंने ध्रुव को 'ओम नमो भगवते वासुदेवाय' का मंत्र दिया। ध्रुव यमुना नदी के तट पर जाकर इस मंत्र का जाप करने लगे। तपस्या के समय ध्रुव की आयु मात्र पाँच वर्ष की थी।

ध्रुव ने छह महीने तक कठोर तपस्या की, तब भगवान विष्णु ने प्रसन्न होकर उन्हें दर्शन दिए और अपनी गोद में बिठाया। भगवान विष्णु ने ध्रुव से कहा कि तुम्हारी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होंगी। मैं तुम्हारी भक्ति से प्रसन्न होकर तुम्हें वह लोक प्रदान करता हूँ, जिसके चारों ओर ज्योतिष चक्कर घूमता है और जिसके आधार पर सब ग्रह-नक्षत्र घूमते हैं। इसी तरह ध्रुव भगवान विष्णु के प्रिय भक्त बन गए और सप्तर्षि मंडल में ध्रुव तारे के नाम से जाने जाते हैं।